का सूक्ष्म अध्ययन आश्चर्यजनक है और इस मामले में सत्य हरिश्चन्द्र दुनियाभर में अब तक बनी फिल्मों में सर्वोपरि रखी जा सकती है।'' 1923 में महानन्दा फिल्म करने के बाद अपने आपको कंपनी के प्रबंधन और तकनीकी तक ही सीमित रखा। 16/4/2020

बंगाल का पहला कथा-चित्र विश्व मंगल मदन साहब की कंपनी द्वारा सस्तम जी धोतीवाला के निर्देशन में बना। 1923 से 1927 के बीच 10 फिल्में। निजाम के संरक्षण में बनी। चिन्तामणि, इन्द्रजित, लेडी टीचर, मैरेज टानिक, सती सिमातनी, हटगौरी स्टेप मदर, अश्मेध यज्ञ तथा शिवाजी हैं।

धीरेन गांगुली और बाबूराव पेंटर फाल्के साहेब के बाद सबके समर्थ फिल्मकार हैं। 1915 में एस.एन. पाटवाकर ने नारायण राव की हत्या नामक फिल्म बनाई। सम्पत ने 1919 में कोहिनूर फिल्म कंपनी बनाई। कहोरामर खून पहली फिल्म कम्पनी की थी। 1921 में भक्त विदुर नामक फिल्म बनाई और विदूर की भूमिका स्वयं निभाई। 1924 में काला नाग नामक फिल्म बनाई। मालती माधव में बाघ को लेकर कुछ खतरनाक दृश्य फिल्माए।

चन्दूलाल शाह ने जगदीश फिल्म कम्पनी के लिए विश्वमोहिनी, गृहलक्ष्मी, चन्द्रमुखी और राजलक्ष्मी का निर्देशन किया। चन्दूलाल शाह के बाद अर्देशिर एम. ईरानी का नाम आता है। वीर अभिमन्यु 1922 में बनाई। इसके बाद ख्वाब-ए-हस्ती बनी। 1928 में आर.एस. चौधरी द्वारा निद्रेशित अनारकली और माधुरी ने धूम मचाई। मदन साहब ने कलियानाग फिल्म का अधिकार खरीदा। प्रियवति गांगुली, रूस्तम जी, धोतीवाला, ज्योतिष बन्दोपाध्याय, मधु बोस, शिशिर कुमार भादुड़ी सरेशचन्द्र मिश्र की सहायता से सौ से अधिक फिल्में बनाई।

एक्शन और साहसिक कारनामों से भरी हुई फिल्म बनाने का काम वाडिया बंधु ने शुरू की। इनकी पहली फिल्म थंडरवोल्ट (दिलेर डाकू) तथा कई स्टंड फिल्में बनाई। रेलगाड़ी पर कई स्टंड दिखाये गये। स्टंड फिल्मों में लायनमैन (1932), हिवलविड (1933), दिलरूवा डाकू (1933) प्रमुख फिल्में हैं।

डी. सिक्का की फिल्म बाइसिकिल थीन्स देखकर सत्यजित रे ने निश्चय कर लिया कि उन्हें फिल्म बनाना है। ''मैं सिनेमा घर के बाहर पक्का निश्चय करके निकला की मुझे फिल्मकार ही बनना है।'' सत्यजित रे ने सिनेमा के पूँजीवादी अकलात्मक स्वरूप के समानान्तर समायोन्मुख सिनेमा को सामने लाया।

मृणालसेन के 'भुवन सोम' से कला सिनेमा की शुरूआत होती है सत्यजित रे ऋत्विक घटक तथा तत्कालीन साहित्यकारों ने इसमें महत्त्वपू

16/4/20
(2)

में फ्रांस की पाथे कम्पनी के कुछ कैमरामैन कलकत्ता पहुँचे। सेन ने उन कैमरे के बारे में जानकारी प्राप्त की एक कैमरा खरीदने का प्रयास किया। इस प्रयास में असफल होने पर सेन ने स्वयं कैमरा बना डाला। इस स्वनिर्मित कैमरे से सेन ने कई शॉट्स लिये। 1901 से 1905 तक नाटककार अमर दत्त के लगभग 12 नाटकों का फिल्मांकन किया। 5 अप्रैल 1985 को 'अमृत बाजार पत्रिका' ने रीयल बाइस्कोप की खबर छापी। सेन ही सर्वप्रथम विज्ञापन चित्र बनाया। सेन ने अपनी फिल्मों के नये कोणों से छायांकन क्लोज-अप, टाइटल्स प्रदर्शन का प्रयोग किया।

सावेदादा तथा हीराला सेन के अलावा बम्बई के धानवाला, प्रो. एंडसन कलकत्ता के प्रे. स्टीवेंसन तथा जमशेद जी मदन हैं। प्रो. स्टीवेंसन ने 'अडासिंग सीन फ्राम द फ्लाव/ऑफ पर्सिया तथा द पेनोरमा ऑफ इंडियन सीन एण्ड प्रोशेसन। थानावाला ने स्टलेंडिड न्यू विवज ऑफ बाम्बे' तथा ताबूत प्रोमोशन को अपनाया।

हीरालाल सेन की बाइस्कोप का जब धूम मचा था तभी 1904-1905 में जमशेद जी ने कलकत्ता में तम्बुओं में बाइस्कोप दिखाना शुरू किया।

1907 में कलकत्ता में न्यू मार्केट के पास एलिफिंस्टन पिक्चर पैलेस' नामक स्थायी चित्रग्रह का निर्माण किया। अब इसे चैपलिन के नाम से जाना जाता है। धीरे-धीरे सम्पूर्ण भारत, वर्मा, श्रीलंका में फिल्म प्रदर्शन करने लगे। कलकत्ता में वे थियेटर कंपनी भी चलाते थे। प्रसिद्ध कैमरामैन ज्योतिष चन्द्र सरकार की मदद से उन्होंने बारह नाटकों को फिल्माना शुरू किया।

दादासाहेब फाल्के ने भारतीय फिल्म की स्थिति को बदला। 1913 में राजा हरिश्चंद्र नामक फिल्म बनाई। फाल्के अपने जीवन की शुरूआत फोटोग्राफर तथा ड्रामा कंपनी के दृश्य पेंटर के रूप में की। घर की परिस्थिति फाल्के के विपरीत थी। अपने विचार को व्यवहारिक रूप देना चाहते थे। 40 वर्ष के व्यक्ति के पास आमदनी का कोई स्रोत नहीं था। फाल्के के शब्दों में "धीरे-धीरे हजारे घर की चीजें बिकती जा रही थी, मैंने सिनेमा उपकरणों की मूल्य सूचियों सिनेमा संबंधी पुस्तकें और अपने प्रयोगों की सामग्री एकत्र की और अपने प्रयोगों में जुटा रहा। अगले छः महीने तक मैं केवल दिन में तीन घंटे ही सो पाता था।"

दादासाहेब ने अपना स्टूडियों नासिक में स्थापित किया। 1913 में मोहिनी भस्मासुर और 1914 में सत्यवान का निर्माण किया। इनका फिल्मों की काफी प्रशंसा मिली। लन्दन की बाइस्कोप 2005 सिनेमेटोग्राफ बीकली ने लिखा, 'टेकनीक की दृष्टि से दादासाहेब की ये फिल्में बेजोड़ हैं। इसमें वर्जित जीवन

हिन्दी सिनेमा: उद्भव और विकास 16/4/2020

(1)

हिन्दी सिनेमा के उद्भव पर विचार करते समय हमें देखना होगा कि भारत में पहली बार 1912 में फीचर फिल्म पुंडालिक बनी 1931 में आर्देशिर ईरानी ने आलमआरा नामक बोलती फिल्म का निर्माण किया। इससे पहले मूक सिनेमा का ही दौर था। यह दौर 1934 तक चलता रहा। इस युग में कुल 1288 फिल्में बनी, इनमें प्रमुख हैं–दादा साहब फाल्के की 'कालिया मर्दन', 'राजा हरिश्चन्द्र' (1500 फुट) 'कृष्ण जन्म', 'लंकादहन', हिमांशु राय की प्रेम सन्यास (लाइट ऑफ एशिया) सिराज और प्रपेंय पाश (ए थ्रो ऑफ डाइस) जी.जी. पवार की दिलेर जिगर और गुलामी का पतन, हीरालाल एम. भट्ट की सिद्ध प्रेम पी.एन. राय की मतीड वर्मा 'संत तुकराय' तथा 'भक्ति प्रहलाद'। मुक फिल्मों में दो शीर्षक होते थे एक अंग्रेजी में और दूसरा प्रादेशिक भाषा में। कई सिनेमा घरों में कमेंटेटर होते थे वे पर्दे पर लक्ष्य रही घटना को समझाते थे। दूसरी तरफ वाह्य यंत्र रखे होते थे। जिनमें तबला, हारमोनियम, सारंगी, पियानो, वायलिन आदि प्रमुख थे। गुलजार ने लिखा है–इनका उपयोग पर्दे पर दिख रहे दृश्यों में नाटकीयता और प्रभाव पैदा करने के लिए किया जाता है।

विश्व में पहले चलचित्रण प्रदर्शन युक्तियों ब्रदर्स ने पेरिस में 1895 में किया था। छः महीने बाद बंबई के वाटसन होटल में 1896 में चलचित्रों का प्रदर्शन किया। इस प्रकार भारत में फिल्म निर्माण की पृष्ठभूमि तैयार हुई। 1954 में स्क्रीन नायक पत्रिका में सावेदादा ने बताया कि युक्तियों बंधुयों से प्रभावित होकर लन्दन से एक कैमरा मँगवाया। 1897 में पहला लघुचित्र बनाया। प्रसिद्ध गणितज्ञ परांजये के स्वागत समारोह के फिल्मांकन को भारत का पहला समाचार चित्र माना जा सकता है।

बंगाल के प्रसिद्ध कथाकार कालीश मुखोपादयाय ने हीरालाल सेन को भारत में चलचित्र कलकत्ता से चलचित्र का प्रारंभ हुआ। हीरालाल सेन और उनके भाई, तोती लालेसन 1898 में रीयल बाइस्कोप कंपनी बनाई। उन्होंने चलचित्रों का प्रदर्शन प्रारंभ किया। बासु भट्टाचार्य ले लिखा है–''सन 1900